ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 40 • अंक 157 • अप्रेल-जून, 2013

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

वाक्य और अर्थ : एक विश्लेषण

(न्याय–मीमांसा और हॉस्पर्स के संदर्भ में)

–समणी आगमप्रज्ञा

दर्शन जगत् में अनेक विषयों पर चर्चा होती है। शब्दार्थ और वाक्यार्थ का विषय भी इससे वंचित नहीं है। वाक्य की सबसे छोटी इकाई को शब्द और शब्द की सबसे छोटी इकाई को 'अक्षर' कहते हैं। दूसरे शब्दों में अक्षरों को मिलाकर शब्दों का और शब्दों को मिलाकर वाक्यों का निर्माण होता है। दर्शन जगत् में ये प्रश्न बहुचर्चित रहे हैं– क्या शब्द सिर्फ आवाज या चिन्ह् मात्र ही हैं? क्या शब्द स्वयं अपने आपमें अर्थ को लिए हुए होते हैं? क्या शब्दों के समूह मात्र को वाक्य कह सकते हैं? इन्हीं सब प्रश्नों का विश्लेषण भारतीय (विशेष रूप से न्याय और मीमांसक दर्शन) एवं पाश्चात्य दार्शनिकों एवं चिन्तकों ने किया हैं। यहां दोनों ही विचारधाराओं के चिन्तन को प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय साहित्य में शाब्धबोध का विवेचन व्याकरण, न्याय तथा मीमांसा इन तीन शास्त्रों में विशेष रूप से किया गया है। व्याकरण शास्त्र में पद–पदार्थों का विवेचन है, इसलिए उसे 'पदशास्त्र' कहते हैं। नैयायिक विशेष रूप से प्रमाण का विवेचन करते हैं अतः इसे 'प्रमाण शास्त्र' कहते हैं। इसी प्रकार मीमांसक विशेष रूप से वाक्यार्थ का विवेचन करते हैं इसलिए इसे 'वाक्य–शास्त्र' कहते हैं।[1] यहां वाक्यार्थ का विवेचन होने से मीमांसक के मत को उपस्थित किया जायेगा किन्तु वाक्यार्थ को जानने से पूर्व वाक्य के स्वरूप को जानना जरूरी है। साहित्य दर्पण में वाक्य के स्वरूप को बताते हुआ कहा हैं–

वाक्यं स्याद्योग्यताऽऽकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः[2]

अर्थात्– योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति इन तीनों तत्त्वों से युक्त पदसमूह वाक्य कहलाता है।

योग्यता–साहित्य दर्पण में योग्यता को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि– **योग्यता पदार्थानां परस्परसंबंधे बाधाभावः।**[3] अर्थात् पदों के अर्थों में परस्पर संबंध में बाधा का अभाव होना ही योग्यता है। उदाहरणतः बिना योग्यता के यदि सिर्फ शब्दों के समूह को ही वाक्य मान लिया जाए तो फिर 'वह्निनना सिञ्चति' अर्थात् 'अग्नि से सिञ्चन करता हैं इसे भी वाक्य मानना पड़ेगा। किन्तु वास्तव में अग्नि में सिञ्चन की योग्यता नहीं है। अतः इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता।

आकांक्षा–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में आकांक्षा को परिभाषित करते हुए कहा गया है– **यत्पदेन विना यस्याऽननुभावकता भवेत्– आकांक्षा।**[4] अर्थात् जिस पद के बिना पद का शाब्दबोध न हो सके उस पद के साथ उस पद की आकांक्षा है। जैसे– 'आनय' इस क्रियापद के बिना 'घटम्'यह कारक पद शाब्दबोध को उत्पन्न नहीं कर सकता है अतः क्रियापद के साथ कारकपद की आकांक्षा है। दूसरे शब्दों में, पदों के अर्थों की उपस्थिति में, अन्वयबोध के जनक के रूप में इच्छा के अभाव का अभाव होना ही आंकाक्षा है। उदाहरणतः बिना आकांक्षा के सिर्फ शब्दों के समूह को वाक्य कहा जाए तो फिर 'हाथी, मगर, दाना, आकाश' इसे भी वाक्य कहना होगा। ये सारे ही शब्द– हाथी, मगर, दाना, आकाश अर्थपूर्ण तो है किन्तु इनमें आकांक्षा न होने से इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता।

आसत्ति–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में आसत्ति को परिभाषित करते हुए कहा गया– **सन्निधानं तु पदस्यासत्तिरूच्यते।** [5] अर्थात् पद के सन्निधान (सामीप्य) को आसत्ति कहते हैं। दूसरे शब्दों में, पदों के अर्थों की उपस्थिति में व्यवधान (कालभेद) के अभाव का अभाव होना ही आसत्ति है। उदाहरणतः कोई कहे– 'राम', दूसरे दिन कहे– 'लक्ष्मण', शाम को कहे 'जंगल' तीसरे दिन कहे– 'जा रहे हैं'। यहां पर भी ये शब्द अर्थपूर्ण है किन्तु इनके बीच कालक्षेप होने से आसत्ति का अभाव है। इससे कोई भी व्यक्ति इसके अर्थ को समझ नहीं सकता। इस प्रकार पदों के समूह में योग्यता, आकांक्षा एवं आसत्ति होने पर ही वह वाक्य कहलाता है। भारतीय चिन्तकों के अनुसार योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति ये तीनों ही वाक्य– निर्माण की तीन कसौटियाँ है जो वाक्य के अर्थपूर्ण होने में निमित्त बनती है। वाक्य तभी सार्थक/अर्थपूर्ण बनता है जब उसमें योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति होती है।

अब प्रश्न है क्या वाक्य में अर्थ पहले से ही अन्वित होता है या बाद में अभिहित किया जाता है। इस विषय में मीमांसा दर्शन में कई मत पाए जाते हैं। उनमें से दो मुख्य है– 'अभिहितान्वयवाद' और 'अन्विताभिधानवाद'।[6] कुमारिल भट्ट और उसके अनुयायी पार्थसारथिमिश्र आदि अभिहितान्वयवादी हैं। इसके विपरीत प्रभाकर और उसके अनुयायी शालिनाथमिश्र आदि अन्विताभिधानवादी हैं। जहां अभिधा शक्ति के द्वारा, पदों के द्वारा पदार्थ अभिहित (बोधित) होते हैं और बाद में वक्ता के तात्पर्य के अनुसार उनका परस्पर

अन्वय (संबंध) होकर वाक्यार्थ की प्रतीति हो। उसे अभिहितान्वयवाद कहा जाता है। इसके विपरीत जहां पदों में पदार्थ पहले से ही अन्वित होकर वाक्य के अर्थ का बोध कराए उसे अन्विताभिधानवाद कहा जाता है। इसके अनुसार पदार्थों का 'अन्वय' पूर्व से ही सिद्ध होने के कारण 'तात्पर्यी शक्ति' की आवश्यकता नहीं रहती। इस प्रकार मीमांसको में कुछ चिन्तकों ने अर्थ को शब्द में अन्वित माना है तो कुछ ने अन्वित नहीं माना है।

भारतीय दर्शन की तरह पाश्चात्य जगत् में भी वाक्य और अर्थ की चर्चा उपलब्ध होती है । जॉन हॉस्पर्स ने अपनी पुस्तक Introduction to Philosophical Analysis में इसका विशद विवेचन किया है।

हॉस्पर्स के अनुसार शब्द वाक्य की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। शब्द में अर्थ प्रारम्भ से ही निहित नहीं था बल्कि मनुष्य ने शब्द को अर्थ प्रदान किया है। 'Human being have given words their meanings; or more precisely, human beings have taken certain noises and given them meanings.'[7] वास्तव में, शब्दों में अर्थ अभिहित किया जाता है। 'The meanings that words have were originally not discovered but assigned-[8] शब्द और अर्थ का संबंध वैसा ही जैसा बोतल का लेबल जिस प्रकार लेबल के अनुसार बोतल की पहचान होती है उसी प्रकार शब्द भी अभिहित अर्थ को ही बताता है। वाक्य एवं वाक्यार्थ के बारे में हॉस्पर्स का भी यही कहना है कि शब्दों के समूह मात्र से ही वाक्य नहीं बनता। 'Every sentence must be composed of words; but not every string of words is a sentence. Word meaning does not guarantee sentence meaning.[9] वाक्य के लिए सार्थक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। इसके अतिरिक्त शब्दो का समायोजन भी उचित होना चाहिए। जैसे– 'Run very eat and' इस वाक्य में शब्द तो सार्थक है किन्तु इनका समायोजन उचित नहीं। अतः इस परिस्थिति में वाक्य अपने अर्थ को सम्यक् रूप से प्रस्तुत नहीं कर सकता। अतः यह वाक्य निरर्थक है। भारतीय दर्शन के अनुसार भी ऐसे वाक्य में आसत्ति नहीं होने से वे वाक्य निरर्थक कहलाते हैं।

हॉस्पर्स के अनुसार वाक्य की सार्थकता को जानने के लिए दो तथ्यों का विश्लेषण जरूरी है। एक– वाक्य का गलत होना। दूसरा– वाक्य का निरर्थक होना। जैसे– 'There are intelligent beings on other galaxies' यह वाक्य गलत हो सकता है किन्तु अर्थपूण है। वहीं 'Saturday is in bed', ये वाक्य न सही है ना गलत बल्कि अर्थहीन या निरर्थक है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि गलत वाक्यों को विपरीत लिखने पर सही हो जाते हैं किन्तु निरर्थक वाक्यों को विपरीत लिखने पर भी निरर्थक ही रहते हैं, सार्थक नहीं बनते। जैसे ऊपर कथित वाक्यों को विपरीत रूप से कहे– 'There are no intelligent beings on other galaxies' तो यह वाक्य अर्थपूर्ण होने के साथ–साथ सही भी बन जाएगा। वहीं

'Saturday is not in bed' यह वाक्य विपरीत लिखने पर भी निरर्थक ही रहेगा।[10] दूसरे शब्दों में, गलत वाक्य में अर्थपूर्णता होती ही है किन्तु अर्थहीन वाक्य ना गलत होता है, ना ही सही।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हॉस्पर्स ने वाक्य के सार्थक होने की कुछ कसौटियों को भी प्रस्तुत किया है।[11]

1. **कल्पना–योग्यता** (Imaginability)– यदि वाक्य कल्पना का विषय बनता है तो उसे अर्थपूर्ण वाक्य कहा जाता है। जैसे– 'बर्फ गुलाबी है।' यद्यपि हम जानते हैं कि बर्फ गुलाबी नहीं होता किन्तु फिर भी हम गुलाबी बर्फ की कल्पना कर सकते हैं चाहे वह अस्तित्व में हो या न हो। अतः कल्पना योग्य होने से यह वाक्य कि 'बर्फ गुलाबी है,' गलत होते हुए भी अर्थपूर्ण है। उसी प्रकार हम नरसिंह की कल्पना भी कर सकते हैं, चाहे वह अस्तित्व में हो या न हो। इसलिए यह वाक्य– 'इस दुनिया में नरसिंह हैं, गलत है किन्तु फिर भी अर्थपूर्ण है। उस स्थिति में यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या वे सभी वाक्य अर्थहीन होते हैं जिसके बारे में हम कल्पना नहीं कर सकते? जैसे– 'ईमानदारी सब से अच्छा गुण है।' इस वाक्य के बोलने पर हम क्या कल्पना कर सकते हैं (नहीं कर सकते) और कल्पना नहीं होने से क्या यह वाक्य अर्थहीन हो जाएगा? नहीं। क्योंकि कल्पना उस वाक्य का अर्थ नहीं दर्शाता बल्कि वह उस वाक्य का आप पर क्या प्रभाव हुआ यह बताता है। इसलिए कल्पना योग्य होने से वाक्य अर्थपूर्ण और न होने से वाक्य अर्थहीन बनता है, ऐसा नहीं है। Actually, it is a sufficient condition and not a necessary condition. इसके अतिरिक्त ऐसा भी बहुत बार पाया जाता है कि एक ही वाक्य बोला जाता है लेकिन कुछ व्यक्ति उस वाक्य की कल्पना कर सकते हैं और कुछ व्यक्ति नहीं कर सकते। इसलिए निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वाक्य में कल्पना योग्यता होना वाक्य की एक कसौटी तो है किन्तु वह ही है –ऐसी बात नहीं।

2. **व्याख्या योग्यता** (Describability)– यह अर्थपूर्ण वाक्य की दूसरी कसौटी है। इसके अनुसार वही वाक्य अर्थपूण कहलाता है जिसकी व्याख्या की जा सकती है या जिसे दूसरे शब्दों में व्यक्त किया जा सके। जैसे– 'Ectomorphs are Mendacious' इस वाक्य को हम दूसरे शब्दों (उसकी परिभाषा या पर्यायवाची शब्दों) से प्रस्तुत कर सकते हैं। अतः यह वाक्य अर्थपूर्ण है। व्याख्या की आवश्यकता तब होती है जब हम वाक्य में प्रयुक्त कठिन शब्दों का अर्थ नहीं जानते हैं।

इस कसौटी के लिए भी यही कहा जा सकता है कि यह संभव नहीं कि हम सभी वाक्यों की व्याख्या कर सके। और व्याख्या संभव न होने पर वह वाक्य अर्थहीन बन जाए यह भी

जरूरी नहीं। जैसे– 'मेरे पेट में अजीब सा दर्द है।' हालांकि यह वाक्य अर्थपूर्ण है किन्तु इस वाक्य में 'अजीब से दर्द' शब्द की व्याख्या करना संभव नहीं। दूसरी बात– यह भी संभव है कि हम जिन शब्दों से वाक्य की व्याख्या कर रहे हैं, उन शब्दों से सामने वाला व्यक्ति परिचित न हो और हमारी व्याख्या निरर्थक कहलाएं।

3. वाक्य की सत्यता की शर्तों का ज्ञान (Truth Condition)– यह तीसरी कसौटी है। इसके अनुसार वाक्य तब अर्थपूर्ण बनता है जब कोई यह बतलाने में समर्थ हो कि ऐसी कौनसी शर्ते हैं जिनके अन्तर्गत वाक्य सही (कहलाऐगा) होगा। जैसे– 'पानी पहाड़ी के ऊपर की तरफ बहता है' यदि हम देख लेते हैं कि पानी पहाड़ी के ऊपर की तरफ बह रहा है, तब तो वाक्य के सही होने में कोई शंका नहीं परन्तु सामान्यतः यह वाक्य गलत है क्यूंकि हम पानी को पहाड़ी के ऊपर बहता हुआ नहीं देखते। किन्तु हॉस्पर्स के अनुसार यह वाक्य भी सही हो सकता है यदि हम पानी के पहाड़ी के ऊपर बहने की शर्तों को जानते हैं। अब समस्या यह है कि फिर तो हम किसी भी वाक्य के सत्य होने की शर्त निकाल लेंगे और जिससे सभी वाक्य अर्थपूर्ण बन जाएंगे। इस स्थिति में अर्थपूर्ण और अर्थहीन का कोई अंतर नहीं रह पाएगा। जैसे– 'शनिवार बिस्तर पर है' इस वाक्य के सत्य होने की यह शर्त बनाई जा सकती है कि – 'शनिवार का बिस्तर पर होना'। इस शर्त के आधार पर यह वाक्य– 'शनिवार बिस्तर पर है' सत्य बनता है किन्तु यह उचित शर्त नहीं। अतः जो शर्तें दी जाए वे उचित होनी चाहिए। अनुचित शर्तों से वाक्य की सार्थकता नहीं होनी चाहिए।

4. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के तुल्य उदाहरण का होना (Knowing what it's like)– चतुर्थ कसौटी के अन्तर्गत हॉस्पर्स का कहना है– यह संभव है कि जिन वाक्यों का उच्चारण कोई कर रहा हो और उन वाक्यों का अर्थ आप नहीं जानते हो, आप उसके बारे में कल्पना भी नहीं कर पा रहे हो। किन्तु यदि आप यह बता दें कि वह किसके जैसा लगता है, तो वह वाक्य अर्थपूर्ण कहलाता है। जैसे– यदि कोई कहे – 'मौसंबी खट्टी है' और सामने वाले को समझ में न आए तो वह उस वाक्य को निरर्थक समझेगा। किन्तु यदि वह उसे यह बता दें कि 'नींबू जैसी खट्टी है', तो वह तुरन्त समझ जायेगा और वह उस वाक्य को अर्थपूर्ण मानेगा। किन्तु जब वाक्य हो कि 'शनिवार बिस्तर पर सोया है, और यह कहा जाए कि 'जैसे 'शुक्रवार सोया है वैसे ही' तो यहां जैसे करके बताने पर भी व्यक्ति समझ नहीं पाएगा कि क्या कहा जा रहा है। अतः यह वाक्य निरर्थक है।

5. संदर्भ युक्त शब्दों का प्रयोग (Meaninglessness outside a given context)– इस शर्त के अनुसार जिन वाक्यों में शब्द सन्दर्भ के अनुसार प्रयुक्त नहीं होते हैं, तो वे

वाक्य को अर्थहीन बना देते हैं। जैसे– 'पदार्थ विश्व के ऊपर है।' विश्व में सम्पूर्ण आकाश समाहित हो जाता है। उसके अलावा (विश्व के ऊपर) और कोई भी आकाश प्रदेश नहीं जहां वस्तु को रखा जा सके। अतः विश्व के ऊपर किसी पदार्थ के होने की संभावना नहीं की जा सकती। अतः यह वाक्य अर्थपूर्ण नहीं है। वस्तु वहीं रखी जा सकती है जहां खाली आकाश हो। मेज के ऊपर कोई वस्तु रखी जा सकती है न कि विश्व के ऊपर।

इसके अतिरिक्त यह वाक्य जैसे– 'अक्षर 'अ' बड़ा है।' यह वाक्य अर्थहीन है क्यूंकि 'बड़ा' या 'छोटा' सापेक्ष (Relative) शब्द है। एक वस्तु अपने आप में बड़ी या छोटी नहीं होती। यदि यह कहा जाए– 'अक्षर 'अ' 'ब' से बड़ा है' तो यह वाक्य अर्थपूर्ण बन जाएगा। वस्तु बड़ी या छोटी अपेक्षा से होती है। इस प्रकार संदर्भ के बिना शब्दों का प्रयोग वाक्य को अर्थहीन और संसदर्भ शब्दों का प्रयोग वाक्य को अर्थपूर्ण बना देता है।

6. वर्ग विपर्यास (Category-mistake)– इस दुनिया की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी वर्ग में आती है। जैसे– पुस्तकें, पेन्सिल, पेन, डायरी आदि ये सारी वस्तुऐं स्टेशनरी वर्ग में आती है। धान्य, चीनी, आदि वस्तुएं 'किराणा' वर्ग में आती है। यदि एक वर्ग की वस्तु को दूसरे वर्ग के अन्तर्गत रख दिया जाए तो उसे वर्ग विपर्यास कहा जाता है। इस प्रकार की गलती वाक्य को अर्थहीन बना देती है। जैसे– 'मैंने शब्दों को सूंघा, कानों से खाया', आदि। इस वाक्य में Category-mistake हैं क्यूंकि शब्दों को सूघां नहीं जा सकता और कानों से खाया नहीं जाता। इसलिए ये वाक्य अर्थहीन है। उसी प्रकार यदि कोई कहे कि– 'अंक 7 को हार्ट अटेक आया है।' इस वाक्य में भी वर्ग विपर्यास है। हॉट अटेक मनुष्य या प्राणी जगत् से जुड़ी बात है। अंकों के साथ यह बात जुड़ी हुई नहीं है। यदि कोई कहे कि इस वाक्य का अर्थ तो समझ में आ ही रहा है। अतः यह वाक्य अर्थहीन नहीं गलत है ऐसा कहना चाहिए तो यह भी उचित नहीं हैं क्योंकि यदि इस वाक्य को अर्थहीन न कहकर गलत कहा जाए तो फिर इसका विपरीत 'अंक 7 को हार्टटेक नहीं आया है' यह सही होना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं है। अतः ऐसे वाक्य अर्थहीन ही होते हैं।

7. विरोधात्मकता (Self-contradictoriness) जिन वाक्यो में विरोधात्मकता हो वे वाक्य अर्थहीन कहलाते हैं। जिन वाक्यों में एक ही वस्तु में दो विरोधी बातों का समावेश किया जाता है वे वाक्य विरोधात्मक वाक्य कहलाते हैं। जैसे– 'कमरा बिलकुल खाली है किन्तु पुस्तकों से भरा हुआ है।' यह वाक्य अर्थहीन हैक्यूंकि जो वस्तु खाली है वह भरी हुई कैसे हो सकती है? कमरा खाली या भरा हुआ एक साथ कैसे हो सकता है?यदि कोई अपेक्षा भेद लगाकर कहे कि इसमें कोई काम की वस्तु नहीं इसलिए खाली है और बेकार की पुस्तकों से भरा होने से भरा हुआ भी है। इस परिस्थिति में वाक्य अर्थपूर्ण बन सकता है। किन्तु जहां

अपेक्षा भेद के बिना एक ही वस्तु में विरोधी लक्षण कहे जाए तो वे वाक्य को अर्थहीन बना देते हैं। जैसे–'वन्ध्या का पुत्र' यह Self-contradictory वाक्य है। अतः अर्थहीन है।

दोनों ही विचारधाराओं का शब्द, वाक्य और अर्थ के संबंध में अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि जहां भारतीय विचारक शब्द और अर्थ के संबंध में दो मत रखते हैं वहीं पाश्चात्य विचारक शब्द में अर्थ को अभिहित करने की बात को स्वीकार करते हैं। भारतीय चिन्तकों ने जहाँ योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति इन तीन कसौटियों से वाक्य की सार्थकता को माना है वहीं हॉस्पर्स सात कसौटियों के आधार पर वाक्य की अर्थपूर्णता का आकलन करते हैं। दोनों ही विचारधाराओं के वाक्यार्थ के संबंध में मानदण्ड भिन्न–भिन्न है किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। अन्ततः हम शब्द, वाक्य एवं अर्थ के बारे में हुए भारतीय एवं पाश्चात्य विवेचन को समझकर सार्थक वाक्यों का प्रयोग करें।

सन्दर्भ –

1. मम्मटाचार्य प्रणित काव्य प्रकाश, हिन्दी व्याख्याकार– आचार्य विश्वेश्वर, सम्पादक– नरेन्द्र, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 13वां पुनर्मुद्रण, 2010, पृ. 35
2. विश्वनाथकविराज प्रणीत साहित्य दर्पणः, व्याख्याकार– कृष्ण–मोहन शास्त्री, चौखम्बार संस्कृत संस्थान, वाराणसी, षष्टम् संस्करण– 2001, द्वितीय परिच्छेद, पृ. 27
3. वहीं, पृ. 27
4. विश्वनाथभट्टाचार्य विरचित भाषापरिच्छेदापर नामिका न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, संस्कृत–हिन्दी व्याख्या सहित, व्याख्याकार–ज्वालाप्रसाद गोड, सम्पादक– दुण्ढिराज शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2003, पृ. 444
5. वहीं, पृ. 431
6. काव्य प्रकाश, पृ. 35–38
7. John Hospers, Introduction to Philosophical Analysis, Allied Publishers Private Limited, New Delhi, 15th Reprint 2002, p. 3
8. Ibid, p. 5
9. Ibid, p. 77
10. Ibid, p. 81
11. Ibid, p. 83

सहायक आचार्य

जैन दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन विभाग,

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ
प्रकाशन सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
01.	Anekant: Reflection & Clarification	Acharya Mahaprajna	30
02.	Anekant: Views & Issues	Acharya Mahaprajna	30
03.	Shraman Bhagwan Mahavir Life & Doctrine	Shri S.C. Rampuria	300
04.	Anekanta- The Third Eye	Acharya Mahaprajna	195
05.	Science in Jainism	Prof. M.R. Gelra	200
06.	The Quest for Truth	Acharya Mahaprajna	195
07.	Sound of Silence	Acharya Mahaprajna	140
08.	Journey into Jainism	Sadhvi Vishrut Vibha	39
09.	Jain Studies & Science	Prof (Dr.) M.R. Gelra	400
10.	Non-violence Relative Economics and A New Social Order	Prof. B.R. Dugar/Dr. Satya Prajna/ Dr. Samani Ritu Prajna	500
11.	Jain Biology	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri/ Prof. Muni Mahendra Kumar	200
12.	Samayasara	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri/ Prof. Muni Mahendra Kumar	450
13.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhavi Vishrutavibha	1125
14.	Bhagavai-2	Acharya Mahaprajna Eng. Trans. by Prof. Muni Mahendra Kumar & Late Dr. N. Tatia	1695
15.	JVB & JVBU Research Work	Samani Agam Prajna/Dr. Vandana Mehta	100
16.	Bibliography of Jain Text in Tamil	Shri K.P. Aravaanan	50
17.	The Enigma of the Universe	Prof. Muni Mahendra Kumar	500
18.	Preksha Meditation and Human Health	Prof. J.P.N. Mishra and Dr. P.S. Shekhawat	500
19.	आचार्य महाप्रज्ञ का संस्कृत साहित्य	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	550
20.	युग को आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय/डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	100
21.	अंगुत्तर निकाय भाग-1	श्री श्रीचंद रामपुरिया	50
22.	अंगुतर निकाय भाग-2	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
23.	महाभारत परिक्रमा	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
24.	श्रमण सूक्त	श्री श्रीचंद रामपुरिया	150
25.	तीर्थंकर वर्द्धमान जीवन प्रसंग	श्री श्रीचंद रामपुरिया	80
26.	आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-1	डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा	400
27.	आचारांग और महावीर	साध्वी शुभ्रयशा	150
28.	सम्बोधि का समीक्षात्मक अनुशीलन	समणी स्थित प्रज्ञा	100
29.	रत्नपालचरितम	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	100
30.	दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
31.	नई सुबह	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
32.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य भाग-1,2,3	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	75
33.	भिक्षु न्यायकर्णिका	पं. विश्वनाथ मिश्र	120
34.	जीवन विज्ञान और स्वास्थ्य	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा/समणी श्रेयस प्रज्ञा	120
35.	योग वैशिष्ट्य	डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	400
36.	अर्द्धमागधी साहित्य में गणित	डॉ. अनुपम जैन	200
37.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
38.	जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	110
39.	शिक्षा दर्शन एवं मूल्य विकास	डॉ. समणी मल्लि प्रज्ञा/डॉ. हेमलता जोशी	160
40.	प्रेक्षाध्यान और योग	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	150

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. अनिल धर द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित